फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 159 सितम्बर 2001

कहत कबीर

जो ओवर टाइम करते हैं और जो छुट्टियाँ कम करते हैं उनके मानसिक रोग होने की सम्भावना अधिक होती है।

अगड़म-बगड़म

आगरा के पाँच सितारा होटल में राष्ट्रपति कक्ष। पेय के घूँट लेते, खुली खिड़कियों से चाँदनी में ताज महल को निहारते **एस्कोर्ट्स** मैनेजिंग डायरेक्टर, **यामाहा** मैनेजिंग डायरेक्टर, **जे.सी.बी.** मैनेजिंग डायरेक्टर और **क्लास** मैनेजिंग डायरेक्टर के बीच गम्भीर चर्चा। मलमास की पूर्व-सँध्या पर मजदूरों के लिये अशुभ ही अशुभ के संकेत।

यह क्या! अगर-मगर की पहेलियों में नहीं बल्कि बिना लाग-लपेट के सीधी-सीधी बातें और अँग्रेजी की बजाय बातचीत हिन्दी में ......

गहरी नींद से जागने के बाद भी चलचित्र की भाँति चीजें दिमाग के घूम रही हैं। कहते हैं कि सपनों की अगड़म-बगड़म में वास्तविकता के कुछ अंश होते हैं। सपनों और हकीकत के भूसे में से आइये अपने लिये दाने बीनें।

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "आपकी सुविधा को ध्यान में रखते हुये देवियों के लिये प्रबन्ध हम ने कुछ दूरी पर स्थित प्रधान मन्त्री कक्ष में किया है। सज्जनो, अतिथि-सत्कार में जो कमियाँ रह गई हैं उनके लिये क्षमा करना।"

यामाहा एम.डी. : "अपने अतिथि-सत्कार पर गर्व करने वाले हम लोगों को आपने मात कर दिया है!"

जे सी बी एम.डी. : "महारानी को आज भी ढोने के बावजूद रस्म-रिवाज और परम्परा के निर्वाह में आप से हम कोई तुलना नहीं कर सकते। हाँ, आपके चेहरे पर झुग्गी-झोंपड़ी-गन्दी बस्तियों के जो दाग हैं उन्हें मटियामेट करने में जे सी बी मशीनें आपके कन्धे से कन्धा मिलाये हैं।"

क्लास एम.डी. : "व्यवहारिक का लेबल चिपका है। आइये काम की बातें करें।"

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "सज्जनो, संक्षेप में पृष्ठभूमि। सट्टेबाजी का दौर है पर सट्टेबाजी का भी आधार उत्पादन-निर्माण है। इसलिये व्यापार के संग उत्पादन-क्षेत्र में हम ने पैर पसारे। आपकी यहाँ उपस्थिति ही विश्व के एक इकाई होने का प्रमाण है और इस हकीकत को ट्रैक्टरों के व्यापार के समय से ही एस्कोर्ट्स ने स्वीकारा है। उत्पादन-क्षेत्र में दुनियाँ-भर की कम्पनियों से हमारे करार-समझौते वास्तविकता के अनुरूप चलने की कथा-मात्र है।

"धन्धों में हम कोई परहेज नहीं करते। बीमारियों में दो पैसे नजर आये तो हम ने अस्पताल खोले। सट्टेबाजी के नये स्तर के माफिक बनने के लिये वित्त-क्षेत्र के संग-संग सूचना प्रोद्योगिकी-आई.टी.-इलेक्ट्रोनिक्स में हम ने प्रवेश किया है। परम्परावादी होने के संग-संग परिवर्तन को शाश्वत सत्य मानने वाले हम लोगों के लिये किसी भी प्रकार की काट-कूट अपवित्र नहीं है। सज्जनो, परिवर्तन ही आज की हमारी मन्त्रणा का केन्द्र-बिन्दु है।"

क्लास एम.डी. : "परम्परा और परिवर्तन — बहुत सुन्दर! यह सिधान्त तो सब कुछ अपने में समेटे है, सर्वग्रासी है। इलेक्ट्रोनिक्स की गति ने बात बदलने में इतनी शीघ्रता ला दी है कि हम लोग अधिकाधिक अटपटी स्थिति में धकेले जा रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता अनुसार दलील देने वाला खजाना मुझे परम्परा और परिवर्तन में नजर आ रहा है।"

यामाहा एम.डी. : "प्रबन्धन के लिये अनुसन्धान अनिवार्यता है। हम ने परम्परा और परिवर्तन पर व्यापक मैनेजमेन्ट रिसर्च आरम्भ की हुई है।"

जे सी बी एम.डी. : "अध्ययन के लिये एक सुन्दर उदाहरण श्रीमान द्वारा 1983 में सफलता से अपनी रक्षा करना है। एस्कोर्ट्स का प्रबन्धन हथियाने के लिये उच्च स्तर पर बनी योजना को परम्परा और परिवर्तन के जिस खूबसूरत प्रयोग से जनाब ने नाकामयाब किया उसी का परिणाम है कि स्वराज पाल इंग्लैण्ड में अब हाउस ऑफ लॉर्ड्स का सदस्य है।"

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "धन्यवाद! चौकस तो हम रहते ही थे, 1983 के घटनाक्रम ने हमें चौकन्ना भी कर दिया। इसी का परिणाम है कि 1985 में राजीव गाँधी के वित्त मन्त्री वी.पी. सिंह द्वारा नई आर्थिक नीति को हरी झण्डी दिखाने से पहले ही हम आगामी बड़े परिवर्तनों के लिये योजनायें बनाने लगे थे। आप श्रीमानों के सक्रिय सहयोग और भागीदारी की बदौलत ही अल्प काल में हम इतना कुछ कर सके हैं। परिवर्तन के इस सिलसिले में मजदूरों से निपटने के लिये अब हम निर्णायक मोड़ पर पहुँच गये हैं।"

क्लास एम.डी. : "निर्णायक मोड़ नहीं बल्कि एक निर्णायक मोड़ कहिये क्योंकि मजदूरों से निपटने का सिलसिला हमारे जीवन-भर चलेगा। ऐसे निर्णायक मोड़ तो आगे भी आयेंगे।"

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "जी हाँ, आप ठीक कहते हैं, बिलकुल ठीक कहते हैं। खैर। कुछ बातों से आप लोग प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े रहे हैं और कई पहलुओं की विस्तृत जानकारी आपको है। इसलिये तथ्यों की सपाट बयानी तक मैं स्वयं को सीमित रखूँगा।

"परिवर्तन वाली इस योजना का प्रस्थान-बिन्दु कम्पनी की पुनर्रचना था, री-स्ट्रक्चरिंग था जिसे हम ने निर्धारित समय में सफलता से सम्पन्न किया। यह हम लोगों के अपने बीच का मामला था। इसमें कटुता के अभाव का ही परिणाम है कि हम आगे भी मिल कर कार्रवाई के लिये तैयार हैं। फोर्ड ट्रैक्टर बनाने वाली एस्कोर्ट्स ट्रैक्टर लिमिटेड को हम ने समाप्त किया और उसे एस्कोर्ट्स लिमिटेड में मिलाया। पूर्व का फोर्ड प्लान्ट अब एस्कोर्ट्स लिमिटेड के एग्री मशीनरी ग्रुप का प्लान्ट - II है। मोटरसाइकिल डिविजन को एस्कोर्ट्स लिमिटेड से अलग कर पहले उसे ई वाई एम एल में किया तथा फिर पूर्णतः यामाहा मोटर के हवाले कर दिया गया है। एस्कोर्ट्स - जे सी बी में नियन्त्रण जे सी बी को सौंप दिया गया है। एस्कोर्ट्स इम्पलाइज एनसिलरी लिमिटेड को एस्कोर्ट्स ऑटोमोटिव लिमिटेड में बदल दिया गया है।

"परिवर्तन वाली इस योजना का प्रमुख भौतिक पहलू री-इंजिनियरिंग था और इसमें समय लगा। नई इमारतों का निर्माण, नई मशीनों का आगमन, विद्यमान मशीनों की लाइन सिस्टम अनुसार पुनः स्थापना के लिये नई नींव बनाने में समय लगना ही था लेकिन आप लोगों के हिसाब से इसमें अधिक समय लगा है। अपनी कार्यकुशलता हम और बढायेंगे।"

यामाहा एम.डी. : "यहाँ आये अधिक समय मुझे नहीं हुआ है। यहाँ की परिस्थितियों में आपकी कार्यकुशलता किसी से कम नहीं है।"

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "धन्यवाद! मजदूरों के साथ आसन्न युद्ध के दृष्टिगत इस हौसला

(बाकी पेज चार पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

और बातें यह भी

क्लच आटो मजदूर : "शर्त लगा रखी है कि मँजूरी के बिना छुट्टी नहीं करोगे। जब हम फार्म भर कर अपनी ड्यु छुट्टियाँ माँगते हैं तब साहब लोग कह देते हैं कि छुट्टी नहीं मिलेगी और फार्म फाड़ देते हैं। कोई मजदूर स्वयं छुट्टी कर लेता है तो उसका कार्ड रोक लेते हैं। यह सब इसलिये कि कम्पनी ने रिलीवर नहीं रखे हैं।"

सी एम आई वरकर : "स्टाफ ने आपस में तय कर लिया है और दबाव के बावजूद कोई इस्तीफा नहीं दे रहा। हम मजदूरों पर भी इस्तीफों के लिये दबाव है। हम में भी इस्तीफे नहीं देने की सहमति है। मजदूरों में एकता नहीं है। मजदूर अलग-अलग समूह में हैं। एक-दूसरे को टँगड़ी मारने वाली ग्रुपबाजी- गुटबाजी हमारे समूहों में नहीं है। बारह गाँवों के कोई चौधरी के इर्द-गिर्द एकता कायम कर हमें नाथने की कोशिश हो रही है लेकिन हम एकता के फन्दे में फँस नहीं रहे। हमारे समूहों में तालमेल बढें तो बहुत अच्छा रहेगा।"

मितासो मजदूर : "आधे वरकरों को निकालने की योजना है। कम्पनी ने गेहूँ एडवान्स देने से जानबूझ कर इनकार किया। इस पर लीडरों ने ओवर टाइम बन्द का आदेश दिया। चेतावनियों की झड़ी लगा कर मैनेजमेन्ट ने एक वरकर को सस्पेन्ड भी कर दिया है। भड़का कर मूँडने का जाल है।"

लिसिनेवल आटो लेक वरकर : "बही-खातों में ही वार्षिक उत्पादन 78 करोड़ रुपये पहुँच गया है। ईनाम के तौर पर वर्क्स मैनेजर को 40 हजार रुपये जी एम को एक लाख 60 हजार रुपये और वाइस प्रेसीडेन्ट को एक लाख 70 हजार दिये हैं। मजदूरों को पैसे देने की बात आती है तो कहते हैं कि कम्पनी को घाटा हो रहा है।"

गवर्नमेन्ट प्रेस मजदूर : "समस्या यह है कि हर कोई समस्याओं का समाधान निजी स्तर पर करने में जुटे हैं। इससे होता यह है कि हर कोई जोड़-तोड़ के चक्रव्यूह में अकेले-अकेले जूझते हैं। जबकि, समस्याओं के निजि व सामाजिक, दोनों पहलू हैं। एक-दूसरे के साथ तालमेल से ही राहें निकलेंगी। इधर गवर्नमेन्ट प्रेस मैनेजमेन्ट ने एल टी सी बन्द कर दी है। छुट्टियों में घर जाने की जो थोड़ी-सी राहत थी उसे भी सरकार छीन रही है।"

इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड वरकर : "हर जगह फायदा के बारे में सोचा जा रहा है—आदमी के मरने पर भी। साँस बन्द होते ही तुरन्त उठाओ की बातें होती हैं। क्या फायदा लाश को रखने और रोने-पटकने से ? शुभ-अशुभ देखना बन्द कर दिया है। शाम को मुर्दा नहीं जलाने की मान्यता थी, इसे त्याग दिया है। सोचा जाता है कि रात को कौन इसके पास बैठेगा, कौन पिछली बातों को याद करेगा। साठ-सत्तर साल जिस परिवार के लिये भागमभाग रहे उसमें साँस बन्द होते ही 'क्या फायदा?' की बात आ जाती है। इधर इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड फैक्ट्री 5 साल से बन्द है और अभी तक हमारा हिसाब नहीं दिया है।"■

कानून हैं शोषण के लिये, छूट है कानून परे शोषण की

एम.एस. टैक्सटाइल्स मजदूर : "रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। हर रोज 12 घण्टे का काम करने पर महीने के 1600 रुपये देते हैं। यह पैसे भी 15 तारीख के बाद देते हैं।"

एपीजे इंजिनियरिंग कालेज वरकर : "हमें ठेकेदार के जरिये काम पर रखा। चार साल से हमारे वेतन में से प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे काटे जाते थे। अब ठेकेदार कहता है कि आगे से वह फण्ड के पैसे नहीं काटेगा। फण्ड स्लिप हमें एक भी नहीं दी गई है और ठेकेदार ने फण्ड नम्बर बताने से इनकार कर दिया है।"

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास मजदूर : "परमानेन्ट वरकर 250 हैं और दस ठेकेदारों के जरिये एक हजार के करीब अन्य वरकर फैक्ट्री में रखे हैं। ठेकेदार तो कहने भर को हैं, सब कुछ कम्पनी करती है। मजदूरों को 1200 रुपये महीना तनखा देने के लिये ठेकेदारों को तो आड़ बनाया है। पूरी चोर-बाजारी है। आज 17 अगस्त तक किसी को जुलाई की तनखा नहीं दी है।"

अमेटीप मशीन टूल्स वरकर : "जुलाई की तनखा आज 16 अगस्त तक हमें नहीं दी है।"

रॉयल टूल्स मजदूर : "प्लॉट 74 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 100 लोग काम करते हैं। तनखा 1500 से 1800 रुपये महीना देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड कुछ वरकरों को ही दिये हैं, बाकी को नहीं। पी.एफ. की पर्ची नहीं मिली है।"

मनचूर इन्डस्ट्रीज वरकर : "फैक्ट्री में हम 25-26 कैजुअल वरकर हैं। परमानेन्टों को दे दिया है पर हमें जुलाई का वेतन आज 17 अगस्त तक नहीं दिया है।"

हिन्दुस्तान वायर मजदूर : "भेड़िये-मेमने वाली कहानी दोहरते हुये मैनेजमेन्ट ने आयु प्रमाण के नाम पर 117 परमानेन्ट वरकरों को नौकरी से निकाला। अब फिर 210 की लिस्ट लगाई है। जुलाई की तनखा आज 22 अगस्त तक हमें नहीं दी है।"

फर आटो वरकर : "50 परमानेन्टों को तनखा दे दी है लेकिन हम 40 कैजुअलों और ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूरों को जुलाई की तनखा आज 21 अगस्त तक नहीं दी है। हमारी तनखा में से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं लेकिन हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते।"

गैले इण्डिया वरकर : "प्लॉट 63 सैक्टर-27 ए और प्लॉट 25 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्रियों में रोज 12 घण्टे ड्युटी करवाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम देते हैं, 7 रुपये घण्टा देते हैं। कम्पनी ने 5-6 साल पहले जिन मजदूरों को स्वयं भर्ती किया था उनमें से 8-10 को अब ठेकेदारों के जरिये रखे बता कर नौकरी से निकाल दिया है।"

बाकमैन इन्डस्ट्रीज मजदूर : "सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हम 150 वरकर काम करते हैं लेकिन किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड और प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची नहीं दी हैं। हैल्परों को 1400 रुपये महीना वेतन कम्पनी देती है। ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से।"

धाम प्लास्टिक वरकर : "प्लॉट 18 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1200 रुपये महीना वेतन देते हैं। कुछ मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं और कुछ को नहीं। पी.एफ. की पर्ची किसी वरकर को नहीं मिली है।"■

★★★ख़त गाँव गये फैक्ट्री मजदूर का

"हमारे गाँव में लगभग सौ प्रतिशत मजदूर हैं। कुछ शुद्ध मजदूर हैं — यह खेतिहर मजदूर हैं और इनमें महिला अधिक हैं, पुरुष कम। बाकी गाँव छोड़ कर बाहर कहीं मजदूरी कर रहे हैं। गाँव में ही कुछ किसानी और मजदूरी, दोनों करते हैं। कुछ ऐसे हैं जो सिर्फ किसानी करते हैं। सब में आर्थिक स्तर पर 19-20 का ही अन्तर है परन्तु मानसिक स्तर पर कई प्रकार का अन्तर दिखाई देता है या दर्शाया जाता है — कहीं 19-20 का, कहीं 18-21 का तो कहीं जमीन-आसमान का अन्तर दर्शाया जाता है। मेरी रोड़ के किनारे एक छोटी-सी जनरल स्टोर की दुकान है — छुटपुट ग्राहक आते हैं, बाकी समय बैठने को ही रहता है। कुछ मुझे बैठे देख कर मुँह फेर लेते हैं तो कुछ मुझे खाली बैठे देख कर मेरे पास बैठ जाते हैं और अपनी दिक्कतें-परेशानियाँ बताने लगते हैं। 'क्या करें? कैसे करें?' — इन्हीं पर चर्चा होती है। लगता है कि ऊँची जाति के कहे जाने वाले लोग सलूट चाहते हैं, धनी लोगों को सलाम की ख्वाहिश रहती है। मुझे सलाम-सलूट पसन्द नहीं है। अब मेरे जैसे लोगों की तादाद बढ रही है।"■

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं और 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें और अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

हालात यह हैं

टालब्रोस आटोमोटिव मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने 110 वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं और उनकी तनखा 1400 रुपये महीना है। श्रम विभाग में शिकायत पर अधिकारी 7 जुलाई को फैक्ट्री पहुँचे। मैनेजमेन्ट ने कहा कि कोई ठेकेदार नहीं है। उन 110 मजदूरों को कम्पनी के कैजुअल वरकर बता कर श्रम विभाग अधिकारियों के सामने उन्हें जून की तनखा 1965 रुपये महीना के हिसाब से ई.एस.आई. व फण्ड काट कर दी। श्रम विभाग अधिकारियों के फैक्ट्री से जाते ही मैनेजमेन्ट ने स्टाफ और ठेकेदारों के जरिये हर वरकर से पैसे वापस ले लिये।"

इण्डिया क्राफ्ट वरकर : "दिल्ली में मोहन कोआपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मार्च, अप्रेल व मई की तनखायें नहीं दी और हमारे कदमों को रोकने के लिये जून में मैनेजमेन्ट ने 125 स्त्री-पुरुष मजदूरों को गुड़गाँव ट्रान्सफर के पत्र दिये। कहा कि अपने खर्चे पर गुड़गाँव जाओ-आओ। दिल्ली सरकार के श्रम विभाग के चालानों को मजदूरों के सामने मैनेजमेन्ट फाड़ कर फेंक देती है। हमें डराने-धमकाने के लिये कम्पनी ने सरिता विहार थाने की पुलिस बुला रखी है। कम्पनी अदालत से स्टे ले आई है और पुलिस ने हमें फैक्ट्री गेट से दूर कर दिया है। जिन्हें ट्रान्सफर-पत्र नहीं दिये हैं उन्हें मार्च, अप्रेल, मई की तनखायें इधर दे दी हैं लेकिन उन्हें भी जून और जुलाई की तनखायें आज 18 अगस्त तक नहीं दी हैं। श्रम विभाग में अब 29 सितम्बर की तारीख पड़ी है।"

शिवम् एक्सपोर्टर मजदूर : "प्लॉट 208 सैक्टर-24 में किसी भी दिन उत्पादन बन्द नहीं होता — जन्माष्टमी, 15 अगस्त, दशहरा को भी फैक्ट्री चलती है। मैनेजिंग डायरेक्टर की माँ के मरने की खबर 9 बजे फैक्ट्री पहुँची तब काम शुरू हो चुका था — उस दिन छुट्टी की पर उस रोज की हमारी तनखा काट ली। हर रोज 12 घण्टे की ड्युटी है — 4 घण्टे ओवर टाइम के, पेमेन्ट सिंगल रेट से। रविवार को भी ओवर टाइम। हम हैल्परों को वेतन 1300 रुपये महीना देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों की भी तनखा 1300 रुपये महीना है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं — प्रायवेट इलाज करवाते हैं, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। ई.एस.आई. कार्ड माँगने पर नौकरी से निकाल देते हैं।"

एवरी इण्डिया वरकर : "कम्पनी डाँवाडोल है। कलकत्ता फैक्ट्री में 6 महीनों से मैनेजमेन्ट मैटेरियल नहीं दे रही — 350 परमानेन्ट मजदूर ड्युटी में खाली बैठते हैं। कम्पनी उस मेन फैक्ट्री को बन्द करना चाहती है। यहाँ सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री की मैकेनिकल डिविजन की 90 प्रतिशत मशीनें कम्पनी ने बेच दी हैं। जिन 175 को नोएडा ट्रान्सफर किया था उनमें से कई ने परेशान हो कर नौकरी छोड़ दी है। यहाँ इलेक्ट्रोनिक्स डिविजन में 325 लोग हैं। इधर दो-तीन महीनों से कम्पनी स्टाफ से जबरन इस्तीफे लिखवाने में लगी है: 'कागज रखा है, रिजाइन लिखो नहीं तो टरमिनेट करेंगे'। इस प्रकार 126 निकाल दिये हैं — 6 ने इस्तीफे लिखने से इनकार कर कम्पनी को परेशानी में डाला हुआ है।"

आटोलैम्प मजदूर : "बिजली बिल नहीं भरने के कारण कई दिनों से कम्पनी में पावर नहीं है। ड्युटी समय हम सब फैक्ट्री पार्क में बैठते हैं। पीने को पानी नहीं। लैट्रीन में कीड़े रेंगते हैं, बदबू बरदाश्त से बाहर है। कम्पनी ऐसी हालात पैदा कर रही है कि मजदूर खुद नौकरी छोड़ जायें। लीडरों पर तो कोई भरोसा है ही नहीं, वे हमारे हित में कुछ नहीं करेंगे। क्या करें? कहाँ जायें? जुलाई का वेतन आज 17 अगस्त तक हमें नहीं दिया है।"

नौनिहाल इलेक्ट्रोप्लेटर्स वरकर : "वेतन में देरी के खिलाफ हम ने पिछले महीने दस तारीख को श्रम विभाग में शिकायत की तो लेबर इन्सपैक्टर चटपट आया और कम्पनी का चालान करने की धमकी दी। मैनेजमेन्ट ने दो दिन में वेतन देने का वायदा किया पर दिया 24 जुलाई को जा कर। इस बार भी हम ने 10 अगस्त को श्रम विभाग में जुलाई का वेतन नहीं दिये जाने की शिकायत की। लेकिन आज 19 अगस्त तक लेबर इन्सपैक्टर ने दर्शन नहीं दिये हैं और न ही कम्पनी ने हमें वेतन दिया है।"

सिम्पलैक्स इंजिनियरिंग मजदूर : "पँगा ले कर मैनेजमेन्ट ने 15 जून से 17 मजदूरों का गेट रोका हुआ था। मई व जून की तनखायें मैनेजमेन्ट ने नहीं दी और कहने लगी कि कम्पनी के पास काम नहीं है। पुलिस की मदद से मैनेजमेंन्ट ने 23 जुलाई को मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया है। हम सब मजदूर श्रम विभाग में तारीखों के जँजाल में धकेल दिये गये हैं।" ■

सड़कें कत्लगाह हैं।

आजाद हैं

एसोसियेटेड कन्टेनर टरमिनल लिमिटेड मजदूर: "सैक्टर-59 स्थित कम्पनी ने 15 अगस्त को 4 मजदूरों को ओवर टाइम काम करने को कहा। दोपहर बाद 3 बजे हुक फिसलने से कन्टेनर 40 फुट ऊँचाई से गिरा और सत्यनारायण जी उसकी चपेट में आ गये। बुरी तरह घायल सत्यनारायण जी को साथी मजदूरों ने तत्काल अस्पताल ले जाने की कोशिश की लेकिन सेक्युरिटी ने गेट पर ताला लगा दिया। ए सी टी एल कम्पनी गेट पर ग्रुप फोर की सेक्युरिटी है। पौन घण्टे सत्यनारायण जी तड़फते रहे पर उनके साथी मजदूर लाचार थे। अधिकारी पहुँचे और उन्होंने रफा-दफा करने की कोशिश की। लेकिन तीन मजदूरों के शोर मचाने पर सत्यनारायण जी को बल्लभगढ़ सरकारी अस्पताल ले जाना पड़ा जहाँ डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित किया। अगले रोज, 16 अगस्त को ए सी टी एल में कार्यरत 400 मजदूर कम्पनी गेट पर एकत्र हो कर विरोध प्रकट करने लगे। कम्पनी ने पुलिस बुला ली और पुलिस ने लाठियाँ मार-मार कर मजदूरों को गेट से भगाया। कुछ मजदूर डी एस पी के पास गये तो साहब ने मृत मजदूर के परिवार को 75 हजार रुपये के मुआवजे का ऐलान किया। मैनेजमेन्ट ने 17 अगस्त से 9 मजदूरों का गेट रोक दिया है। हम जगह-जगह शिकायत करते फिर रहे हैं।"

मोहित इन्टरप्राइज वरकर : "पेशाब करने भी नहीं जाने देते। हम मजदूरों के लिये पानी का भी कोई प्रबन्ध नहीं है। वर्कशॉपवाला अपने लिये पानी की बोतलें लाता है और बैठे-बैठे पीता है — हम पानी के लिये तरसते रहते हैं।"

लखानी रबड़ वर्क्स मजदूर : "मैनेजमेन्ट हर समय ज्यादा काम और तेज गति से काम के लिये दबाव डालती है। इससे एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। हम नये वरकर हैं। हड़ताल के जरिये 1996 में सब प्लान्टों के परमानेन्ट मजदूरों को कम्पनी ने नौकरी से निकाल दिया। इन पाँच साल में प्लॉट 234 सैक्टर-24 स्थित लखानी रबड़ वर्क्स में ही: जल्दी माल पकाने के लिये कम्प्रेसर में पाँच-साढे पाँच की जगह आठ के.जी. का प्रेशर बनाया गया जिस वजह से कम्प्रेसर फट गया और अनिल, राम बहादुर व एक अन्य मजदूर बुरी तरह घायल हो गये। सुपरवाइजर की अरजेन्ट है, जल्दी करो के चक्कर में मिक्सिंग मशीन से कमल का पूरा हाथ कट गया। सुरेश की पाँच उँगलियाँ पावर प्रेस पर, श्याम बहादुर की पाँच उँगलियाँ मिक्सिंग मशीन पर, दुर्गा बहादुर की दो उँगलियाँ.....।"

झालानी टूल्स वरकर : "तनखा नहीं दिये जाने के बावजूद लगातार ड्युटी जा रहे सिही निवासी रूप लाल जी ने 8 अगस्त को सल्फास की गोलियाँ खा कर आत्महत्या कर ली। रिटायर होने के दो साल बाद भी कम्पनी द्वारा हिसाब नहीं दिये जाने के कारण मंडनाका निवासी इन्द्रराज जी ने पिछले साल जुलाई में जहर खा कर आत्महत्या कर ली थी। झालानी टूल्स के जालना (महाराष्ट्र) प्लान्ट के मृत मजदूर के पैसे मैनेजमेन्ट द्वारा नहीं देने पर उनकी विधवा ने फैक्ट्री गेट पर मिट्टी का तेल शरीर पर छिड़क आग लगा कर आत्महत्या कर ली। बरसों से भूख और जलालत हर महीने चार-पाँच मजदूरों की जान ले रही है। मैनेजमेन्ट ने हमारी 35 महीनों की तनखायें नहीं दी हैं और हम में से बहुत से जिन्दा लाशों की तरह फैक्ट्री जा रहे हैं।" ■

सतीश कुमार

ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में वास्तविकता को छिपाया जाता है और छवि को उभारा जाता है। व्यक्ति हो चाहे संस्था, मुखौटा सर्वोपरि महत्व ग्रहण कर लेता है। सिर-माथों के पिरामिडों पर चढ़ने तथा खासकरके ऊँचे पर टिके रहने के लिये वीर, विद्वान, सत्यवादी, न्यायप्रिय, ईमानदार की छवि एक अनिवार्यता है। जबकि, सिर-माथों पर चढ़ने-बैठने की पहली शर्त है : अपने स्वयं के तथा दूसरों के तन व मन को क्रूरता से कुचलना।

ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के इन पाँच हजार वर्ष में हकीक़त और छवि इस कदर एक-दूसरे से जुदा होती गई हैं कि नकाबें हवस बन गई हैं। किसी की नकाब की एक परत उघाड़ना भी बौखलाहट को जन्म देने के लिये पर्याप्त है।

ऊँच-नीच वाली वर्तमान समाज व्यवस्था में वास्तविकता को विलुप्त कर देना तथा छवि को हकीकत प्रस्तुत करने ने एक कला का आसन ग्रहण कर लिया है। तत्काल-प्रभाव पैदा करने वाले ऐसे कलाकारों की एक बड़ी सँख्या मीडिया का गठन करती है। छवि बनाने-छवि बिगाड़ने में अखबारों-पत्रिकाओं-रेडियो-टी वी की आज महत्ती भूमिका है। इसने पत्रकारों व रिपोर्टरों के भाव बहुत बढा दिये हैं।

दैनिक अखबार "मजदूर मोर्चा" के सम्पादक सतीश कुमार से तन्त्र के कुछ पुर्जे बहुत नाराज हो जाते हैं। अखबार में इस-उस अधिकारी की हकीकत के अंश छाप कर छवि को मिट्टी में मिला देने का अपराध सतीश कुमार करते हैं। इधर फरीदाबाद के सुपरिटेन्डेन्ट पुलिस की नकाब की कुछ परतें उघाड़ कर उन्होंने साहब को बौखला दिया, गुस्से से भर दिया।

छवि तार-तार ही क्यों न हो गई हो, छवि के अनुसार दिखावा करना पड़ता है। बताते हैं कि पाँच-छह पत्रकारों-सम्पादकों के खिलाफ शुक्रवार को आधी रात बाद पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज की गई। शनिवार, 18 अगस्त को सुबह-सवेरे बिना नम्बर की गाड़ी में सादे कपड़ों में पुलिस वाले उठा कर सिर्फ सतीश कुमार को ले गये। पन्द्रह दिन बाद भी अन्य नामजद पत्रकारों-सम्पादकों में से किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया गया है।

छवि का महात्म्य है। न्याय होता दीखना चाहिये। सतीश कुमार को ड्युटी मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया और दो दिन की पुलिस रिमाण्ड का आदेश दिया गया। सोमवार, 20 अगस्त को अदालत ने जमानत देने से इनकार कर दिया और रोहतक जेल भेज दिया। अपील पर 27 अगस्त की तारीख। अदालत से 100 गज दूर थाने की पुलिस ने कागज प्रस्तुत नहीं किये तो अगले रोज की तारीख दे दी गई। 28 अगस्त को अदालत ने जमानत से फिर इनकार कर रोहतक जेल भेज दिया। कारण पूछने पर पता चला : "सतीश कुमार के विदेश भाग जाने का अन्देशा है"! यानि, जमानत के लिये चण्डीगढ हाई कोर्ट में जाओ .... सुप्रीम कोर्ट जाओ।

जिक्र कर दें, सतीश कुमार के पिता हरियाणा पुलिस के रिटायर्ड डी.एस.पी. हैं। ■

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद-121001

अगड़म-बगड़म..... (पेज एक का शेष)

अफजाई की हमें जरूरत है। री-इंजिनियरिंग की प्रक्रिया के दौरान इसके माफिक दीर्घकालीन एग्रीमेन्ट करना एक अग्नि-परीक्षा से कम नहीं रहा। परम्परा के पैकेज के राग को हम ने परिवर्तन के आई.ई. नोर्म्स वाले ब्रह्मास्त्र से ध्वस्त किया। और, फिर पलट कर परम्परा की दुहाई दे कर खार खाये मजदूरों को एग्रीमेन्ट को मानने को तैयार किया: 'यूनियन लीडरों ने दस्तखत कर दिये तो अब मानना ही पड़ेगा!' वाकई में परम्परा और परिवर्तन की जुगलबन्दी बहुत सुन्दर है — अध्ययन के लिये अधिक साधन मुहैया करेंगे।

"एग्रीमेन्ट तो हम ने कर ली और लागू भी कर दी पर अफसोस की बात यह है कि अब तक हम योजना अनुसार मजदूरों की सँख्या कम नहीं कर पाये हैं। 62 दिन, 70 दिन, 90 दिन, 107 दिन वाली वी आर एस हम ने लगा ली। खाली बैठाना, ट्रान्सफर, कम्पनी जा रही है आदि बातें भी हम ने आजमा ली। लेकिन मजदूर हिलते ही नहीं, यमदूत की तरह जमे बैठे हैं। लगता है कि व्हर्लपूल द्वारा झटके में ढाई हजार मजदूरों को निकालना और फिर 'कम्पनी ने बहुत पैसे दिये' वाले वी आर एस लिये उन मजदूरों की बदहाली ने हमारे कई रास्ते बन्द कर दिये हैं।"

यामाहा एम.डी. : "ई वाई एम एल के दौरान योजना के मुताबिक मजदूरों की सँख्या को 40 प्रतिशत कम नहीं कर पाना हम आपकी अक्षमता समझते थे। लेकिन इधर हम ने 52 से 58 वर्ष वाली योजना के बाद 45 से 51 वाली योजना का भी हश्र देख लिया है। अन्तिम दिन तक 45 से 51 वर्ष आयु वाली वी आर एस के तहत एक भी मजदूर ने इस्तीफा नहीं दिया और समय सीमा के बाद मात्र 9 ने इस्तीफे दिये हैं। इस प्रकार से 700 मजदूरों को नौकरी से निकालने में तो हमारी उम्र गुजर जायेगी।"

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "सज्जनो, मजदूरों से निपटना इस परिवर्तन योजना का भी सार-बिन्दू है। यह बेहद जटिल युद्ध है। यामाहा को 700 निकालने हैं और एस्कोर्ट्स को दो हजार की छँटनी करनी है जिनमें मजदूरों के संग स्टाफ के लोग भी हैं, मैनेजर भी हैं। उपरोक्त परिस्थितियों में हम ने मुड़ कर धूम-धमाके वाले तरीके इस्तेमाल करना तय किया है। काफी समय से ट्रैक्टर मार्केट में मन्दी है। काफी समय से हम एग्रीमेन्ट द्वारा निर्धारित 245 ट्रैक्टर प्रतिदिन की बजाय 100-125 ट्रैक्टर प्रतिदिन ही बना रहे हैं और उनके भी ढेर लग गये हैं, बिक नहीं रहे। इसलिये सोच-विचार कर हमले के लिये यह समय चुना है।

"आक्रमण से पहले हम ने रिहर्सल कर लिया है। प्रयोग के लिये हम ने रेलवे डिविजन को चुना। 23 जुलाई को एस्कोर्ट्स रेलवे डिविजन के सब मजदूर आसानी से फैक्ट्री गेट के बाहर हो गये और 15-20 दिन तक पिंजड़े में बन्द तीतर की तरह हमारी धार पर थे। इस प्रयोग की सफलता के बाद हम ने असली निशाने को साधा है। रेलवे डिविजन से भी अधिक आसानी से एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट के मजदूर 24 अगस्त से फैक्ट्री से बाहर हैं। गाड़ी लाइन पर रही तो एस्कोर्ट्स के सब प्लान्टों के संग-संग यामाहा, जे सी बी और क्लास में भी मजदूर फैक्ट्रियों के बाहर बैठेंगे। आपका सहयोग सुनिश्चित करने के लिये हम आज यहाँ मिले हैं।"

जे सी बी एम.डी. : "हमें जो थोड़ी-बहुत दिक्कत होगी उसे झेल लेंगे। कुछ दिन काम बन्द होने से हमें कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। उत्पादन की यूँ भी माँग कम है।"

क्लास एम.डी. : "अलग-अलग चीजें बनाते हैं इसलिये हमारे बीच मण्डी के लिये प्रतियोगिता नहीं है। और फिर, हम एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। यूँ भी हमारे लिये इस समय ऑफ सीजन ही समझिये। हम आपको पूरा सहयोग देंगे।"

यामाहा एम. डी. : "हम मण्डी में अपना हिस्सा बढा रहे हैं पर फिर भी अभी दो की बजाय एक शिफ्ट में ही मोटरसाइकिल असेम्बल कर रहे हैं। मण्डी में माँग कम चल रही है। ऐसे में हमारे यहाँ हड़ताल होती है तो इसके जरिये झटके में हम 600-700 की बला से छुटकारा पा सकते हैं। हमारे पास तो दलील भी तैयार है: 'एस्कोर्ट्स से हमारा अब कोई लेना-देना नहीं है; इस विवाद में हम हैं ही नहीं; ऐसे में काम करो नहीं तो ....'। लेकिन हमारे यहाँ निर्यात में लफड़ा हो सकता है। हम कई देशों में अपने लिये नई मण्डियाँ खोल रहे हैं इसलिये वहाँ मोटरसाइकिलें माँग अनुसार समय पर पहुँचाना आवश्यक है। इसमें कोई खास दिक्कत नहीं होनी चाहिये लेकिन मुझे कॉरपोरेट आफिस से बात करनी होगी। मुझे पूरा भरोसा है कि यामाहा का पूरा समर्थन एस्कोर्ट्स को मिलेगा क्योंकि यामाहा के अपने हित इससे पूरे होते नजर आते हैं।"

एस्कोर्ट्स एम.डी. : "बहुत-बहुत धन्यवाद सज्जनो! अब ...."

उठिये ! सोते ही रहेंगे क्या ? देर हो रही है ..... ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।